04 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनूभूति

निज स्वरूप की संपूर्णता की अनुभूति

➢➢ स्वयं के निज स्वरूप को देखती मै आत्मा स्वमान में स्थित होती हूं

➳ _ ➳ मैं ब्राह्मण आत्मा विश्व की आधार मुर्त हूं

→ स्व परिवर्तन द्वारा सृष्टि परिवर्तन के इस महान कार्य में परमात्मा की सहयोगी हूं

- कल्प कल्प मुझ ब्राह्मण आत्मा को यह श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होता है
- मैं श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूं

➳ _ ➳ देवी सृष्टि की स्थापना के कार्य में निमित मैं ब्राह्मण आत्मा स्वयं के दैवी गुणों की धारणा की चेकिंग करती हूं

→ ईश्वरीय गोद में आते हैं मुझे आत्मा ने अपने दैवी गुणों का आवाहन किया

→ बाबा की उंगली पकड़े मैं आत्मा संपूर्ण पवित्रता के मार्ग पर चली

→ सर्वशक्तिमान की याद से मैं आत्मा संपूर्ण पवित्र हो गई

- मैं संपूर्ण पवित्र नषटोमोहा आत्मा हू
- अपनी बुद्धि को सर्व संबंधों से, पदार्थों से निकाल एक बाबा की याद में मगन होती जा रही हूं

→ स्वयं को इस सृष्टि पर मेहमान समझ मैं आत्मा सर्व प्रकार के हिसाब चुकता कर निर्बंधन हो गई हू

→ यह देह भी परमात्मा की अमानत है

➳ _ ➳ सर्वशक्तिमान शिव पिता मेरे संपूर्ण स्वरूप का आवाहन कर रहे हैं

→ बाबा की मीठी पुकार सुन मैं आत्मा उड़ चली विश्व ग्लोब के ऊपर

→ बाबा की पवित्र किरणों के नीचे बैठ मै आत्मा सृष्टि की हर आत्मा के प्रति रहम दिल का भाव रखती हूं

→ सृष्टि की हर आत्मा स्वयं को जान सर्व विकारों से मुक्त सतोगुणी बनती जा रही है

- हर आत्मा अपने ओरिजिनल पवित्र स्वरूप में स्थित होती जा रही है

→ अपने शुभ भावना और शुभकामना के इन पवित्र किरणों को संसार में फैलता हुआ देख रही हूं

→ और देखते ही देखते इस धरा पर संपूर्ण पवित्रता की आभा फैल गई हैं

- हर आत्मा और यह संपूर्ण प्रकृति संपूर्ण पवित्र स्वरूप में स्थित है
- संपूर्ण वायुमंडल पवित्रता से महक रहा है
- एक बाबा के साथ हर आत्मा के मन-बुद्धि का तार जुड़ गया है